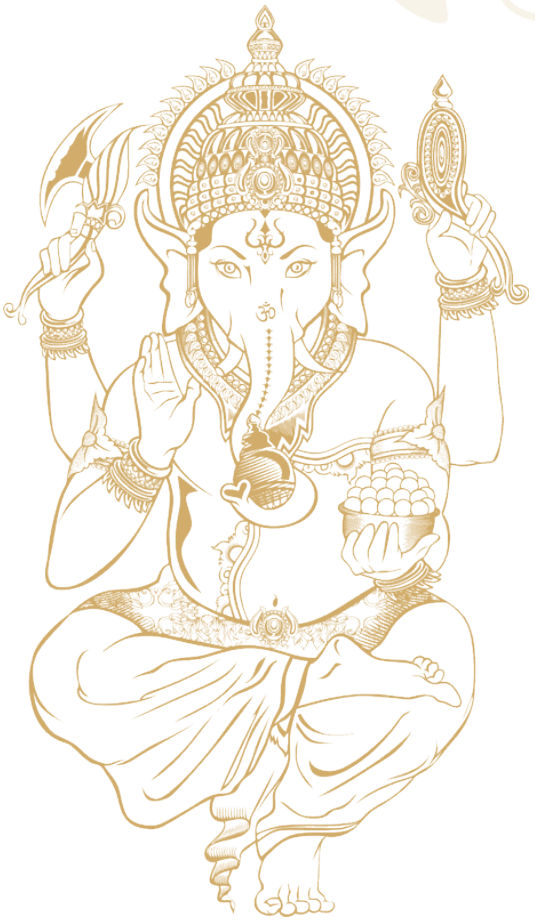

Ishwa Verma

14 Mar 2025

04:23 PM

Bhopal

Model: Baby-Horoscope **Order No: 121290501**

तिथि 14/03/2025 **समय** 16:23:00 **वार** शुक्रवार **स्थान** Bhopal **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:12:34
अक्षांश 23:17:00 उत्तर **रेखांश** 77:28:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:20:08 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	03:32:07 घं
वेलान्तर	00:09:09 घं
सूर्योदय	06:30:14 घं
सूर्यास्त	18:28:44 घं
चैत्रादि संवत	2081
शक संवत	1946
मास	फाल्गुन
पक्ष	शुक्ल
तिथि	1
नक्षत्र	उ०फाल्गुनी
योग	गण्ड
करण	बालव

अवकहड़ा चक्र

गण	मनुष्य
योनि	गौ
नाड़ी	आद्य
वर्ण	वैश्य
वश्य	मानव
वर्ग	श्वान
युँजा	मध्य
हंसक	भूमि
जन्म नामाक्षर	टो-टोनी
पाया(रा.-न.)	रजत-रजत
होरा	चंद्र
चौघड़िया	उद्वेग

विंशोत्तरी

सूर्य 3वर्ष 8मा 19दि

सूर्य

14/03/2025
02/12/2028

	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	14/03/2025
गुरु	09/10/2025
शनि	21/09/2026
बुध	28/07/2027
केतु	03/12/2027
शुक्र	02/12/2028

योगिनी

सिद्धा 4वर्ष 4मा 2दि

सिद्धा

14/03/2025
17/07/2029

	14/03/2025
संकटा	16/06/2025
मंगला	26/08/2025
पिंगला	15/01/2026
धान्या	16/08/2026
भ्रामरी	27/05/2027
भद्रिका	16/05/2028
उल्का	17/07/2029

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			02:09:43	सिंह	मघा	1	केतु	शुक्र	---	0:00			
सूर्य			29:53:53	कुंभ	पू०भाद्रपद	3	गुरु	चंद्र	शत्रु राशि	1.37	आत्मा	पितृ	प्रत्यारि
चंद्र			01:43:56	कन्या	उ०फाल्गुनी	2	सूर्य	गुरु	मित्र राशि	1.30	कलत्र	मातृ	जन्म
मंगल			24:43:23	मिथु	पुनर्वसु	2	गुरु	बुध	शत्रु राशि	1.17	भातृ	भातृ	प्रत्यारि
बुध			15:19:50	मीन	उ०भाद्रपद	4	शनि	गुरु	नीच राशि	0.97	पुत्र	ज्ञाति	साधक
गुरु			19:22:53	वृष	रोहिणी	3	चंद्र	बुध	शत्रु राशि	1.43	मातृ	धन	सम्पत
शुक्र	व		13:27:32	मीन	उ०भाद्रपद	4	शनि	राहु	उच्च राशि	1.58	ज्ञाति	कलत्र	साधक
शनि		अ	28:08:10	कुंभ	पू०भाद्रपद	3	गुरु	शुक्र	स्वराशि	1.46	अमात्य	आयु	प्रत्यारि
राहु	व		03:10:44	मीन	पू०भाद्रपद	4	गुरु	राहु	सम राशि		---	ज्ञान	प्रत्यारि
केतु	व		03:10:44	कन्या	उ०फाल्गुनी	2	सूर्य	शनि	शत्रु राशि		---	मोक्ष	जन्म

लग्न-चलित

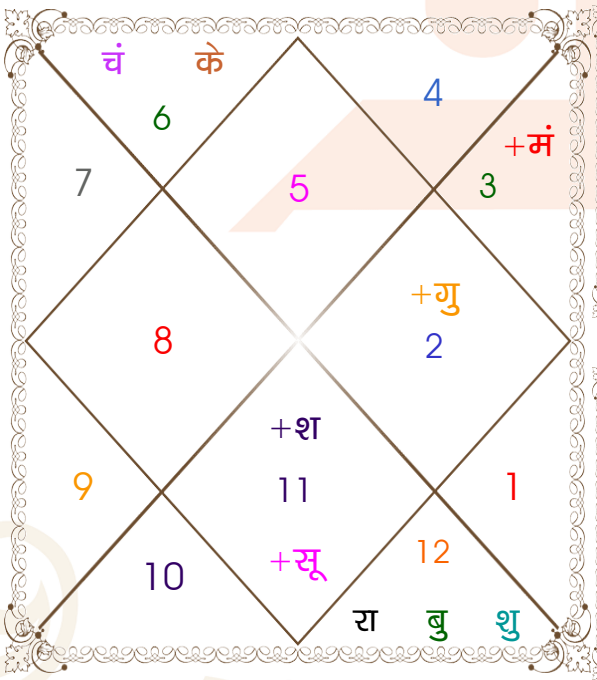

चन्द्र कुंडली

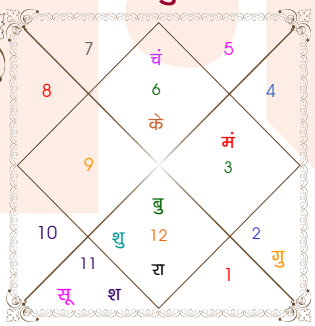

नवमांश कुंडली

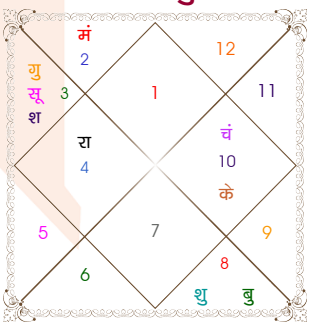

सर्वाष्टकवर्ग

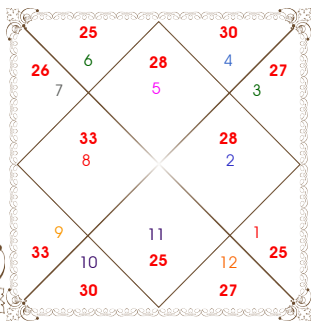

दशमांश कुंडली

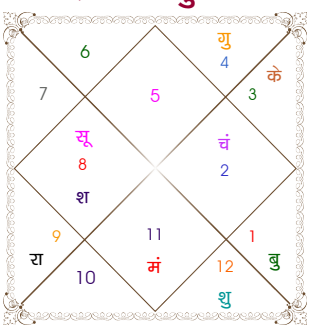

नक्षत्रफल

आप उतराफाल्गुनी नक्षत्र के द्वितीय चरण में पैदा हुई हैं। अतः आपकी जन्म राशि कन्या तथा राशि स्वामी बुध होगा। नक्षत्र के अनुसार आपकी नाड़ी आद्य, वर्ण वैश्य, गण मनुष्य, वर्ग श्वान तथा योनि गौ होगी। नक्षत्र के चरणानुसार आपके राशि नाम का आधाक्षर "टो" से प्रारम्भ होगा।

आपका मन स्वभाव से ही दया एवं करूणा के भाव से परिपूर्ण रहेगा तथा दीन दुःखियों के प्रति आप हमेशा दयालुता का व्यवहार करेंगी। साथ ही अपनी दानशील प्रवृति के कारण समय समय पर दान भी देती रहेंगी। आपका चाल चलन उत्तम एवं प्रशंसनीय रहेगा। आप अपनी सुशीलता तथा कोमल स्वभाव के कारण समाज में लोकप्रिय रहेंगी तथा उचित मान सम्मान तथा आदर प्राप्त करेंगी। आप राज्य या सेना में किसी उच्चपद को भी सुशोभित करने में सक्षम रहेंगी। समाज के अन्य जनों से आप के मित्रतापूर्ण तथा मधुर संबंध रहेंगे साथ ही आप धैर्य के गुण से भी सुसम्पन्न रहेंगी।

दाता दयालु सुतरां सुशीलो विशालकीर्तिर्नृपते प्रधानः।
धीरोऽत्यन्तमृदुर्नरः स्याच्चेदुत्तराफाल्गुनिका प्रसूतौ।।
जातकाभरणम्

अर्थात् उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में उत्पन्न जातक दानी, दयालु, शीलवान, कीर्तिवान राजमंत्री, स्वभाव से कोमल तथा धैर्यधारण करने वाला होता है।

आप अपने जीवन में समस्त सुखसंसाधनों का उपभोग करके प्रसन्नतापूर्वक जीवन व्यतीत करेंगी तथा समाज से यथोचित आदर सत्कार प्राप्त करेंगी। अन्यजनों द्वारा उपकृत होने पर आप उनके प्रति पूर्ण कृतज्ञता का भाव प्रकट करेंगी। कृतघ्नता का भाव आप में नहीं रहेगा। साथ ही आप एक उच्चकोटि की विदुषी भी हो सकती हैं।

भोगी चोत्तरफाल्गुनीभजनितो कृतज्ञः सुधीः।।
जातकपरिजातः

अर्थात उत्तराफाल्गुनी में उत्पन्न जातक भोगी सम्माननीय, कृतज्ञ तथा विद्वान होता है।

समाज के सभी वर्गो में आप समान रूप से प्रिय रहेंगी। आप भी सभी वर्गो के हित कार्यों के लिए हमेशा तत्पर रहेंगी तथा उन्हे अपना तन, मन, धन से सहयोग अर्पण करेंगी। इसके अतिरिक्त आप अपनी विद्या द्वारा धनार्जन करके जीविका का अर्जन करेंगी।

सुभगो विद्याप्तधनो भोगी सुखभागद्वितीयफाल्गुन्यां।
बृहज्जातकम्

अर्थात् उत्तराफाल्गुनी में उत्पन्न जातक सर्वप्रिय, विद्या से धन प्राप्त करने वाला, भोगी तथा सुखी होता है।

आप सुख एवं दुख को समान रूप से सहन करने में समर्थ रहेंगी। सुख में अनावश्यक प्रसन्नता तथा दुःख में अनावश्यक शोक करना आपको पसन्द नहीं होगा। आप साहसी तथा वीरता के गुणों से युक्त होंगी अतः जीवन पथ को साहस पूर्वक प्राप्त करेंगी। साथ ही आप अत्यन्त ही प्रिय वाणी बोलने वाली होंगी जिससे अन्य लोग आपसे प्रभावित तथा प्रसन्न रहेंगे। निशाने बाजी की कला में भी आप निपुण रहेंगी तथा अपने अच्छे व्यवहार तथा कार्यों से समाज में सभी लोगों की प्रिय होंगी।

दान्तः शूरो मृदुर्वक्ता धनुर्वेदार्थ पण्डितः।
उत्तराफाल्गुनी जातो महायोद्धा जनप्रियः।।
मानसागरी

अर्थात् उत्तराफाल्गुनी में उत्पन्न जातक सहनशील वीर तथा मधुर बोलने वाला, धनुष बाण विद्या में निपुण, महायोद्धा तथा सर्वसाधारण का प्रिय होता है।

आप इन्द्रियों पर संयम प्राप्त करने में पूर्ण सफलता प्राप्त करेंगी। आप शान्तचित्त से युक्त महिला होंगी तथा सभी लोग आपसे मधुर संबंधों के उत्सुक रहेंगे। आप तीव्र बुद्धि से भी युक्त रहेंगी तथा सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे।

दान्तः शान्तो मृदुर्वक्ता धनुर्वेदस्य पारगः।
उत्तराफाल्गुनिजातो महाबुद्धिर्जनः प्रियः।।
जातकदीपिका

अर्थात् उत्तराफाल्गुनी में उत्पन्न जातक इन्द्रियों को वश में करने वाला, शान्त स्वभाव से युक्त, मधुर बोलने वाला, धनुर्वेद में पारंगत, महान बुद्धिमान तथा जनता का प्रिय होता है।

आप रजत पाद में उत्पन्न हुई हैं। अतः जीवन में आप धन सम्पति से सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगी तथा कभी भी इसके अभाव की अनुभूति नहीं करेंगी। साथ ही जीवन में विविध प्रकार के सुखसंसाधनों को आप अर्जित करेंगी एवं प्रसन्नता पूर्वक जीवन में इसका उपभोग करेंगी। आप एक बुद्धिमती महिला होंगी तथा दानशीलता के भाव से नित्य युक्त रहेंगी। साथ ही आप में सहनशीलता का भाव भी विद्यमान रहेगा। आपको अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में शीघ्र ही इच्छित सफलता प्राप्त होगी। शरीर से आप अत्यन्त ही कान्ति युक्त रहेंगी तथा आपकी मुखाकृति भी सुन्दर एवं दर्शनीय रहेगी। समाज में आप आदरणीय तथा श्रद्धेय महिला समझी जाएंगी। आप का परिवार भी विस्तृत रहेगा। आपकी वाणी अत्यन्त ही मधुर होगी तथा सभी लोग आपसे प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे। आप सांसारिक सुखों का प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करेंगी। विद्याध्ययन के क्षेत्र में आप पूर्ण रूप से सफल रहेंगी तथा एक विदुषी के रूप में ख्याति अर्जित करने में सफल होंगी। इसके अतिरिक्त आप प्रायः अल्प मात्रा में बोलना ही पसन्द करेंगी।

कन्या राशि में जन्म लेने के कारण आपके हाथ दीर्घता से युक्त होंगे तथा शरीर के अन्य अंग नाक, कान, दांत तथा मुखमंडल सुन्दरता से सम्पन्न रहेंगे। आप एक उच्चकोटि की विदुषी होंगी तथा कई धार्मिक संस्थाओं की संचालिका भी बनेंगी। आप धर्म का यत्नपूर्वक पालन करने के लिए सर्वदा यत्नशील रहेंगी। आपकी वाणी अत्यन्त ही मधुर तथा प्रिय होगी जिससे अन्य जन आपसे प्रसन्न एवं प्रभावित रहेंगे। आप सत्यवादी होंगी तथा शुद्धता एवं पवित्रता के प्रति हमेशा सजग रहेंगी। धैर्य के भाव से भी आप युक्त रहेंगी एवं सभी सांसारिक कार्यकलापों को धैर्य एवं निष्ठापूर्वक सम्पन्न करेंगी। समाज में अन्य जनों की भलाई के कार्यों में भी आप तन, मन, धन से अपना सहयोग प्रदान करेंगी। स्वयं भी परोपकार के कार्यों के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आप दया तथा करूणा के भाव से पूर्ण सुसम्पन्न रहेंगी तथा समस्त जीवों तथा प्राणियों के प्रति अपनी इस भावना का प्रदर्शन आजीवन करती रहेंगी। देखने में आपका रूप एवं सौन्दर्य भी दर्शनीय रहेगा तथा सर्वप्रकार से सुखसम्पन्न रहेंगे। सन्तति संख्या में पुत्रों की संख्या पुत्रियों की संख्या से अल्प रहेगी।

स्त्रीलोलो लम्बबाहुर्ललिततनुमुखश्चारुदन्ताक्षिणिकर्णो।
विद्वानाचार्य धर्मा प्रियवचनयुतः सत्यशील प्रधानः।।
धीरः सत्वानुकम्पी परविषयरतः क्षान्तिसौभाग्यभागी।
कन्याप्रायप्रसूतिबहुसुतरहितः कन्यकायां शशाङ्कः।।
सारावली

आप लज्जा तथा आलस्य युक्त दृष्टि से युक्त होकर गमन करेंगी। साथ ही कन्धे तथा बाहुभाग भी शिथिलता को प्राप्त होंगे। आप जीवन में विविध प्रकार के भौतिक सुखों का आनन्द उठाने वाली सौभाग्यशाली महिला होंगी। आपका शरीर अत्यन्त ही कोमल रहेगा तथा कई कलाओं की आप ज्ञाता होंगी। साथ ही शास्त्रों के ज्ञान के प्रति भी आप रूचिशील रहेगी तथा ज्ञानार्जन करेंगी। आप अपने जीवन में किसी अन्य संबंधी या मित्र के धन एवं गृह आदि का उपभोग करने वाली होंगी। इसके अतिरिक्त आपकी घर की अपेक्षा अन्यत्र देश विदेश में निवास करने की प्रबल इच्छा रहेगी।

व्रीळामंथरचारूवीक्षणगतिः स्रस्तांसवाहुः सुखी।
श्लक्षणः सत्यरतः कलासुनिपुणः शास्त्रार्थविद्धार्मिकः।।
मेधावी सुरतप्रियः परगृहे वितैश्च संयुज्यते।
कन्यायां परदेशगः प्रियवचः कन्याप्रजोळल्पात्मजः।।
बृहज्जातकम्

आप अपने नाना प्रकार के क्रिया कलापों से अन्य जनों अपनी ओर आकर्षित करने में सफलता प्राप्त करेंगी। स्वभाव से आप अत्यन्त सरल तथा सुशील रहेंगी। आप प्रयत्न से हमेशा अच्छे कार्यों को ही सम्पन्न करेंगी। पापकर्मों की आप यत्न से उपेक्षा करेंगी। आप अत्यन्त ही भाग्यशाली होंगी तथा जीवन में अधिकांश सफलताएं भाग्यबल से ही प्राप्त करेंगी। साथ ही संतति संख्या भी अल्प होगी।

युवतिगे शशिनि प्रमदाजनप्रबलकेलिबिलासकुतूहलैः।

विनयशील सुताजननोत्सवै सुविधिना सहितः पुभान।।
जातकाभरणम्

आपकी बुद्धि शुद्ध तथा सरलता से सम्पन्न होगी किसी प्रकार की चालाकी या दिखावा आपकी बुद्धि में नहीं रहेगा। आपकी प्रवृति लेखन कार्य की ओर भी अग्रसर रहेगी तथा काव्य लेखन में आप सफलता तथा यश भी प्राप्त कर सकेंगी। आप में चंचलता का अभाव रहेगा तथा शान्तचित से अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करेंगी। परन्तु जीवन में कभी कभी आप आँखों से कष्ट प्राप्त कर सकती हैं। अपने श्रेष्ठ तथा गुरूजनों के प्रति आपके मन में पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा तथा उनके हित कार्यों को करने के लिए आप हमेशा तत्पर रहेंगी।

विमलमति सुशीलो लेखबुद्धिः कविश्च।
कृषिबलगुणशाली शान्तियुग्मः स्वभावः।।
भवति नयनरोगी धार्मिकः शीलयुक्तः।।
गुरूजन हितकर्ता कन्यका यस्य राशिः।।
जातकदीपिका

आप विलासमय जीवन बिताने की शौकीन रहेंगी। अतः भौतिक सुख साधनों पर खूब व्यय करेंगी तथा उनका प्रसन्नतापूर्वक उपभोग करेंगी। आप विद्वानों तथा सज्जन लोगों को हृदय से सम्मान प्रदान करेंगी तथा ये भी आपसे हमेशा प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे साथ ही दानशीलता की प्रवृति से भी आप सुशोभित रहेंगी। वैदिक धर्म का आप नियमानुसार पालन करेंगी तथा सज्जनों के प्रति आपके मन में प्यार तथा स्नेह का भाव विद्यमान रहेगा। समाज में आप लोकप्रिय रहेंगी तथा संगीत एवं अभिनय का आपको अत्यन्त ही शौक रहेगा तथा अन्य मनोरंजन संबंधी कलाओं से भी आपके संबंध रहेंगे, परन्तु गृहस्थ से आपको कभी कभी कष्ट का भी अनुभव करना पड़ेगा।

विलासी सुजनाह्लादी सुभगो धर्मपूरितः।
दातादक्षः कविर्बुद्धि वेदमार्ग परायणः।।
सर्वलोकप्रियो नाट्यगान्धर्व व्यसने रतः।
प्रवासशीलः स्त्री दुखी कन्याजातो भवेन्नरः।।
मानसागरी

आपकी वाणी अत्यन्त ही श्रेष्ठ एवं प्रिय रहेगी। विद्या का आप अधिक मात्रा में अर्जन करेंगी अर्थात् विभिन्न प्रकार के शास्त्रों का आपको अच्छा ज्ञान रहेगा साथ ही आपका अन्य जनों से मधुर एवं कोमलतापूर्वक व्यवहार भी रहेगा जिससे सभी लोग आपकी प्रशंसा करेंगे। इसके अतिरिक्त आप समस्त जीवन धन एवं ऐश्वर्य का उपभोग करते हुए व्यतीत करेंगी।

कन्यास्थे विषयातुरो ललितवाग्मि विद्याधिको भोगवान।
जातकपरिजातः

मनुष्य गण में पैदा होने के कारण आप धार्मिकता की भावना से युक्त रहेंगी एवं

ब्राहमण तथा देवताओं के प्रति पूर्ण श्रद्धा का भाव प्रदर्शित करेंगी। यदा कदा आप तुच्छ बातों पर अभिमानी प्रवृति का भी प्रदर्शन करेंगी। साथ ही आपका हृदय दया एवं करूणा के भाव से परिपूर्ण रहेगा एवं दीन दुखियों के प्रति आपके मन में सद्भावना व्याप्त रहेगी। बल का आप में अभाव नहीं रहेगा तथा कलाओं का भी आपको अच्छा ज्ञान रहेगा। आप बुद्धिमती होंगी तथा सम्पूर्ण शरीर कान्ति से सुशोभित रहेगा इसके अतिरिक्त आप बहुत से लोगों को सुख प्रदान करने वाली होंगी।

आप धन तथा सामाजिक मान सम्मान से सर्वदा सम्पन्न रहेगी। जीवन में आपको कभी भी इनका अभाव प्रतीत नहीं होगा। आपकी आँखें विशाल तथा शरीर गौरवर्ण का होगा। साथ ही आप निशानेबाजी की कला में भी निपुण रहेंगी तथा नगर या समाज के लोगों को प्रभावित करने में पूर्ण सफलता प्राप्त करेंगी।

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।
प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् मनुष्य गण में उत्पन्न जातक ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, अभिमानी, दयालु, बलवान, कला का ज्ञाता, विद्वान, कान्तियुक्त तथा बहुत से मनुष्यों को सुख तथा आश्रय प्रदान करने वाला होता है।

गो योनि में उत्पन्न होने के कारण आप पुरूष वर्ग के लिए अत्यन्त प्रिय रहेंगी तथा इनसे विशेष सहयोग प्राप्त करेंगी। आप मन में हमेशा उत्साह से सम्पन्न रहेंगी तथा अपने समस्त कार्यकलापों को उत्साहपूर्वक ही सम्पन्न करेंगी। वाद विवाद में आप अत्यन्त ही निपुण रहेंगी तथा अपने प्रभावी तर्कों से किसी को भी अपने समक्ष टिकने नहीं देंगी।

स्त्रीणां प्रियः सदोत्साही बहुवाक्य विशारदः।
स्वल्पायुश्चनरो जातः गो योनौ न सशंयः।।
मानसागरी

अर्थात गोयोनि में उत्पन्न जातक स्त्रियों का प्रिय, सदा उत्साह में रहनेवाला, वादविवाद में चतुर एवं अल्पायु होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा द्वितीय भाव में स्थित है। अतः आपके शुभ प्रभाव से उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। आपके प्रति उनकी पूर्ण वात्सल्य भावना रहेगी तथा जीवन में विद्याध्ययन या धन संबंधी कार्यों में आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी। साथ ही उनसे आप अवसरानुकूल महत्वपूर्ण नैतिक शिक्षा भी ग्रहण करेंगी। इसके साथ ही वे आपको हार्दिक सहयोग देंगी। इस प्रकार आपके परस्पर संबंध भी अच्छे रहेंगे।

आप भी उनसे पूर्ण प्रभावित रहेंगी तथा उनके कथनानुसार ही अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करेंगी। साथ ही जीवन में उनकी सेवा तथा वांछित आर्थिक तथा

अन्य प्रकार से आप उनकी सहायता करती रहेंगी। अतः परस्पर मधुर संबंध एवं विश्वास होने के कारण आप आनन्दपूर्वक जीवन में उनका स्नेह प्राप्त करती रहेंगी।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति सप्तम भाव में है अतः पिता की आप प्रिय रहेंगी। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके शुभ प्रभाव से धनलाभ प्राप्त करने में वे सफल होंगे तथा जीवन में सर्वप्रकार से आपकी सहायता एवं सहयोग करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपके विवाह कराने में उनका पूर्ण सहयोग रहेगा। साथ ही आप उनकी विश्वास पात्र भी होंगी।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी तथा उनकी आज्ञा पालन में भी नित्य रूचिशील रहेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा कुछ सैद्धान्तिक मतभेद भी होंगे जिससे सम्बन्धों में क्षणिक तनाव एवं कटुता उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समयोपरान्त सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही आप जीवन में उनकी सहायता करने के लिए भी तत्पर रहेंगी एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगी।

आपके जन्म समय में मंगल एकादश में विद्यमान है अतः भाई बहिनों से आप स्नेह एवं सम्मान प्राप्त करेंगी एवं जीवन के शुभ एवं महत्वपूर्ण क्षेत्रों में उनसे पूर्ण सहयोग तथा समयानुसार वांछित सहायता भी अजित करेंगी। उनका शारीरिक स्वास्थ्य प्रायः अच्छा ही रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की भी उनको अनुभूति होगी। आपके आय साधनों की वृद्धि में भी उनका प्रमुख योगदान रहेगा। धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में सुख दुःख के समय आपकी यथा शक्ति सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगे।

आपके अर्न्तमन में उनके प्रति स्नेह भाव रहेगा तथा जीवन में यथाशक्ति उनकी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपनी ओर से वांछित आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे। आपके आपसी संबंध भी मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण इनमें कटुता का भाव उत्पन्न होगा। परन्तु यह क्षणिक रहेगा। इसके अतिरिक्त आप सुख दुःख में भी अपना योगदान प्रदान करेंगी।

आपके लिए भाद्रपद मास, पंचमी, दशमी तथा पौर्णमासी तिथियाँ, श्रवण नक्षत्र, शुभ योग, कौलवकरण, शनिवार प्रथम प्रहर तथा वृश्चिक राशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अशुभफलदायक होंगे अतः आप 15 अगस्त से 14 सितम्बर के मध्य 5,10,15 तिथियों, श्रवण नक्षत्र, शुभयोग तथा कौलवकरण में कोई भी शुभकार्य, व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रय विक्रय आदि अन्य शुभ कार्यों को प्रारम्भ न करें अन्यथा लाभ के स्थान पर हानि का ही योग बनेगा। साथ ही शनिवार, प्रथम प्रहर तथा वृश्चिक राशि के चन्द्रमा को भी शुभकार्यों में वर्जित रखें इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा तथा स्वास्थ्य के प्रति भी पूर्ण रूप से ध्यान रखना चाहिए।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मन में अशान्ति शरीर में व्याकुलता, व्यापार में हानि नौकरी या पदोन्नति में बाधाएं उत्पन्न हो रही हों तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव गणेश जी की पूजा करनी चाहिए तथा गणेश चतुर्थी एवं बुद्धवार के उपवास

सम्पन्न करने चाहिए साथ ही सोना, पन्ना, हरा वस्त्र, मूँग की दाल, घृत आदि पदार्थो का श्रद्धापूर्वक किसी सुपात्र को दान करना चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अन्य अशुभ प्रभावों में भी न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त बुध के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 17000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए। ऐसा करने से आप शीघ्र ही अशुभ प्रभावों से मुक्त होंगी तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी। साथ ही अन्य लाभमार्ग भी प्रशस्त होंगे।

ऊँ ब्रां ब्रीं ब्रों सः बुधाय नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं स्त्रीं श्रीं बुधाय नमः।